**International Research Journal of Human Resources and Social Sciences**
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)
**Impact Factor**- 5.414, Volume 4, Issue 7, July 2017
**Website**- www.aarf.asia, **Email** : editor@aarf.asia , editoraarf@gmail.com

# ''शेख अबुल फज़ल का बौद्धिक–साहित्यक योगदान''

**डॉ. अनुराग**
सहायक प्रोफेसर (इतिहास)
गुरु नानक खालसा कॉलेज, यमुनानगर

## ABSTRACT (सार)

*प्रस्तुत शोध लेख में मुख्यतः 16वीं सदी के उत्कृष्ट आलिम एवं इतिहासकार शेख अबुल फज़ल के बौद्धिक साहित्यक योगदान पर प्रकाश डाला जाएगा। अबुल फज़ल, शेख मुबारक का पुत्र एवं फैज़ी का भाई था। वह 1574 ई. में मुग़ल बादशाह अकबर की सेवा में प्रविष्ट हुआ और अपनी बौद्धिकता और सूझ–बूझ से वह शीघ्र ही सम्राट अकबर का विश्वासपात्र और प्रमुख सलाहाकार बन गया। बौद्धिक–साहित्यक संदर्भ में देखे तो अकबरनामा एवं आईने–अकबरी उसकी मूल्यवान बौद्धिक देन है। इस कृति में समकालीन राजनैतिक घटनाओं के साथ–साथ समकालीन प्रचलित विचारधाराएं एवं आर्थिक महत्व की कई महत्वपूर्ण सूचनाएं मिलती है। अबुल फज़ल का बौद्धिक दृष्टिकोण धार्मिक न होकर धर्मनिरपेक्षवादी रहा। उसकी महत्वपूर्ण बौद्धिक देन यह रही कि उसने इतिहास लेखन के क्षेत्र में एक नया बौद्धिक तत्व शामिल किया और इस विषय के प्रति तर्कसंगत और धर्मनिरपेक्ष दृष्टिकोण अपनाया।*

**मुख्य शब्दः** आलिम, सुलहकुल, तकलीद, फिक्ह, वहादत–उल–वुजुद, इबादतखाना

शेख अबुल फज़ल अल्लामी, शेख मुबारक[1] का पुत्र तथा शेख फैज़ी का छोटा भाई था। अबुल फज़ल का जन्म आगरा में जनवरी 1551 ई. में हुआ था[2]। उसकी आरम्भिक शिक्षा अपने पिता शेख़ मुबारक की देख–रेख में परम्परागत आधार पर हुई। फैज़ी और अबुल फज़ल दोनों पर ही

© **Associated Asia Research Foundation (AARF)**
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

अपने पिता शेख मुबारक की उदारवादी विचारधारा का प्रभाव पड़ा था। यह उल्लेखनीय है कि आरम्भ से ही अबुल फज़ल को परम्परागत ज्ञान की प्राप्ति में विश्वास नहीं था, जिसका प्रमाण उसकी रचना अकबरनामा में दिखाई देता है। 20 वर्ष की उम्र तक अबुल फज़ल को तार्किक विज्ञानों और सूफ़ियों के दर्शन की गहन समझ हो चुकि थी[3]। यद्यपि आरम्भ में अबुल फज़ल ने शिक्षकवृत्ति को अपना लिया था तथापि उसका मन सदैव मनन–चिन्तन में लगा रहता। अबुल फज़ल की यह विषेशता रही कि किसी भी कार्य को वह केवल इसीलिए स्वीकार नहीं करता था कि अन्य भी उसको स्वीकार करते हैं, अपितु वह सभी कार्यो को आलोचनात्मक परीक्षण करके, फिर उसके संदर्भ में स्वतंत्र निर्णय या राय लेता था। अबुल फज़ल और उसके परिवार को कुछ समय तक कट्टरवादी उलेमा वर्ग के कारण कठिन एवं विपरीत परिस्थितियों का सामना करना पड़ा था। कट्टर मुस्लिम उलेमा ने अबुल फज़ल के पिता शेख़ मुबारक पर शिया और महदवी समर्थक होन का आरोप लगाया था। उलेमा वर्ग इसे शेख़ मुबारक की हीनता मानता था। एक समय स्थिति यह हो गई थी कि रुढ़ीवादी उलेमा पिता–पुत्र का अन्त करने पर भी उतारु हो गये थे और इसके लिए सम्राट अकबर की अनुमति भी उन्होनें प्राप्त कर ली थी[4]। जिसके कारण शेख़ मुबारक व अबुल फज़ल का जीवन कठिन हो गया और अपनी प्राण रक्षा के लिए उन्होंने शेख़ सलीम चिश्ती की मध्यस्तता की कोशिश की, लेकिन शेख़ सलीम ने उन्हें गुजरात जाने की सलाह दी[5]। इस प्रयास में असफल होने के बाद शेख़ मुबारक ने मिर्ज़ा अज़ीज़ कोका की मध्यस्तता की कोशिश की और वह अकबर से उनकी सुरक्षा प्राप्त करने में सफल हुआ। इसके बाद भी इसी परिवार के दुर्दिनों का अन्त दिखाई नहीं दे रहा था। सौभाग्यवश इसी बीच अकबर ने इबादतख़ाने की स्थापना की और वह उलेमा के प्रभाव को खत्म करने तथा उन्हें राज्य के नियमों के अन्तर्गत लाने के लिए उत्सुक हुआ। इस समय तक अबुल फज़ल का व्यक्तित्व बौद्धिकरुप से रुढ़िवादी विचारों के विरोधी के रुप में उभर चुका था। जब अकबर को अबुल फज़ल की इस चारित्रिक विशेषता की जानकारी मिली तो उसने उसे दरबार में बुला भेजा। शासन के 19 वें वर्ष (1574 ई0) में अबुल फज़ल दरबार में उपस्थित हुआ[6]। अकबर क्योंकि इस समय पूर्वी भारत के अभियान की तैयारी में अधिक व्यस्त था, इसलिए वह अबुल फज़ल की और अधिक ध्यान न दे सका। बाद में फैज़ी के कहने पर अकबर को अबुल फज़ल की स्मृति आई। अबुल फज़ल ने अकबर की विजय से सम्बधित एक टिप्पणी इबादतखाने में प्रस्तुत करने की इच्छा प्रकट की और उसे इसकी अनुमति प्राप्त हुई। अबुल फज़ल ने स्वयं लिखा है कि; 'सम्राट इस रचना पर इतना प्रसन्न हुआ था कि उसने इबादतखाने में उसकी प्रशंसा की।'

अकबर जो निरन्तर सुलहकुल की नीति की ओर बढ़ता जा रहा था, अबुल फज़ल के बौद्धिक विचारों से बहुत प्रभावित होता गया। जैसे–जैसे वह अकबर की बढ़ती हुई कृपा का पात्र बनता गया वैसे–वैसे रुढ़िवादी उलेमा तथा कुछ अमीर भी उसकी इस असामान्य उन्नति से ईर्ष्या करने लगे तथा सम्राट और उसके बीच मनमुटाव पैदा करने की कोशिश करने लगे। अबुल फज़ल ने स्वयं लिखा है कि शत्रुओं की कार्यवाही से एक बार (कुछ समय के लिए)उसके तथा सम्राट के सम्बध तनावपूर्ण हो गये थे। यद्यपि अबुल फज़ल ने इन शत्रुओं का कहीं पर भी नाम नहीं दिया है तथापि ऐसा अनुभाव होता है कि शहज़ादा सलीम इन शत्रुओं में प्रमुख था। उसके शत्रु लगातार उसके विरुद्ध षडयंत्र रचते रहे और अन्ततः 1602 ई. में उसकी हत्या भी करवा दी गई। जब इसघटना की सूचना सम्राट अकबर को मिली तो उसे अत्यन्त शोक व संताप हुआ और वह खूब रोया[7]।

बौद्धिक योगदान के संदर्भ में देखें तो 'अकबरनामा' अबुल फज़ल की अत्यधिक महत्वपूर्ण कृति है। वह यह सोचता था कि अकबर सम्भवतः 120 वर्ष जीवित रहेगा। इसलिए उसके जीवन के प्रत्येक 30 वर्ष का हाल वह एक भाग में लिखेगा। इसका पांचवा भाग 'आईन–ए–अकबरी' होगा, परन्तु अबुल फज़ल केवल तीन भाग ही लिख सका जिसमें तीसरा भाग आईन का था।

अबुल फज़ल का एक महत्वपूर्ण बौद्धिक योगदान यह रहा कि उसने इतिहास लेखन के क्षेत्र में बौद्धिक तत्व शामिल किया और उसने इस विषय के प्रति तर्कसंगत और धर्मनिरपेक्ष दृष्टिकोण अपनाया।तर्कशीलता और विज्ञान के पक्ष में अबुल फज़ल की स्थिति अपेक्षाकृत कहीं अधिक मजबूत थी। वह किसी अपरिवर्तनीय मतवाद में विश्वास नहीं रखता था[8]। इस्लामी जगत् में परम्परा के आधिपत्य और वैज्ञानिक चेतना के अभाव के प्रति अबुल फज़ल दुःख प्रकट करता हुआ लिखता है कि ''परम्परा (तकलीद) की तेज हवा बह रही है तथा विवेक की रोशनी मद्धम पड़ रही है। पुराने के संदर्भ में क्यों और कैसे का दरवाजा बन्द हो गया है तथा प्रश्न और पूछताछ को निरर्थक और कुफ्र समझा जाता है।'' पिता से, गुरु से, सगे–सम्बन्धियों से, दोस्तों से और पड़ोसियों से जो कुछ मिले, उसे खुदा की मेहरबानी माना गया तथा उसने भिन्न मत रखने वालों पर विधर्मी और अपवित्र होने का आरोप लगाया गया। यद्यपि कुछ प्रबुद्ध लोगों ने भिन्न मार्ग अपनाने की कोशिश की , लेकिन वह अपने उस सही मार्ग पर आधे रास्ते से आगे नहीं बढ़ सके हैं।

इतिहासकार नौमान अहमद सिद्धिकी के शब्दों में; 'कोई भी अन्य मघ्यकालीन इतिहासकार विवेकपूर्ण और धर्मनिरपेक्ष इतिहास का दावा नहीं कर सकता और न ही समीक्षात्मक खोज के आधार

पर तथ्यों को एकत्रित करने के प्रति नई पद्धति प्रयोग में ला सकता। ये सारी विशेषताएं अबुल फज़ल के इतिहास लेखन में ही प्राप्त होती है[9]। अकबरनामा के सम्बध में एस. ए. रिज़वी का विचार है कि 'इतिहास के साथ–साथ 'अकबरनामा' में समकालीन राजनीति पर भी प्रकाश पड़ता है। इनके विश्लेषण से अबुल फज़ल के राजनैतिक एवम् धार्मिक विचारों तथा समकालीन विचारधाराओं का भी पता चलता है और साथ ही उस दृष्टिकोण का भी पता चल जाता है जिसके प्रचार का शासन की ओर से प्रयत्न किया गया[10]। इतिहासकार के रुप में अबुल फज़ल की असाधारण देन यह रही कि वह एक ऐसी रचना कर पाया जो महाकाव्य के समान है। अकबरनामा में उसने अकबर को एक मूर्तरुप दिया। इसी प्रकार आईन–ए अकबरी के संकलनकर्ता के रुप में अबुल फज़ल की एक अच्छी छवि उभरती है। यह रचना मुख्य रुप के एक राजपत्र के समान है जिसमें विभिन्न प्रकार के तथा विभिन्न वर्षों के आंकड़े है। अकबरकालीन आर्थिक व्यवस्था व नियमों को समझने के लिये एवं समकालीन वैज्ञानिक और प्रौद्योगिक विषयों के संदर्भ में भी यह एक मूल्यवान कृति है।

अबुल फज़ल की कृति में किसी धार्मिक कट्टरता या आज की भाषा में सांप्रदायिक दुर्भावना का पूरा अभाव था[11]। उनके इसी बौद्धिक दृष्टिकोण ने उसे ज़िया बरनी तथा बदायूनी से अलग ही एक श्रेष्ठतम श्रेणी में ला खड़ा किया है। दिलचस्प बात यह है कि मध्यकालीन भारत के दूसरे इतिहासकार जहां पुस्तक का आरत्भ ईश्वर–वन्दना, पैगम्बर और खलीफों की स्तुति से करते हैं और फिर धीरे–धीरे समकालीन सुल्तान तक आते हैं, वहीं अबुल फज़ल ने अकबर की वंशावली का आरम्भ आदम से करके उसे एक धर्मनिरपेक्ष वंश अर्थात् मध्य एशिया के शासकों के वंश के माध्यम से नीचे तक ले जाते हैं। यह बात इस तथ्य को देखते हुए खासतौर पर अहम लगती है कि अकबर के काल में ही इस्लाम की सहस्त्राब्दी पूरी हुई थी, जिसके कारण इकबर का मज़हब के पुनरुत्थान से से जोड़ने का लोभ कुछ कम नहीं रहा होगा[12]। अबुल फज़ल इस लोभ का प्रतिरोध करते हैं। यही तथ्य उनकी इस चेतना का प्रमाण है कि इस्लाम ही संस्कृति का एकमात्र स्रोत्र नहीं है और यह की संस्कृति इस्लामी हो या कोई ओर, धर्म के अलावा मानव चिन्तन और सभ्यता में दुसरे धर्मनिरपेक्ष स्रोतों का योगदान भी है। मुमकिन है कि समकालीन यूरोप में उभर रही धर्मनिरपेक्ष संस्कृति से उनके कुछ हद तक परिचित होने के कारण उनकी अपनी सोच प्रभावित हुई हो। वे यूरोपीय लोगों द्वारा नई दुनिया (आलम–ए–नौ) खोज और उस पर उनके कब्जे के तथा यूरोपीय चित्रकला के हवाले भी देते हैं।

अन्य धर्मों के प्रति अबुल फज़ल का समाजिक दृष्टिकोण विस्तृत और सार्वलौकिक था[13]। अपने सामाजिक दृष्टिकोण में भी अबुल फज़ल उदारवादी था। वह सूफियों की उदार वजूदी विचारधारा में विश्वास रखता था। सोलहवीं शताब्दी के दौरान महान् अरब दार्शनिक एवम् सूफी इब्न–अल–अरबी (1165–1248 ई-) के वजूदी विचारों को भारत के विभिन्न वर्गो के बीच अधिक लोकप्रियता मिली। इब्न–अल–अरबी का विचार था कि सारे प्राणी मूलतः एक ही है और हर कुछ दैवी पदार्थ की अभिव्यक्ति है[14]। इस प्रकार उनके विचार में विभिन्न धर्म एक ही हैं। इब्न–उल–अरबी यह घोषित करता है कि प्रेम रुपी धर्म और परमात्मा के प्रति औत्सुक्य से श्रेष्ठ कोई धर्म नहीं है। प्रेम सभी धर्मों का सार है, यद्यपि रुढ़िवादी तत्वों ने इस वजूदी विचारधारा की कड़ी आलोचना की तथापि यह विचार की 16वीं सदी तक सूफी बौद्धिक चिन्तन का मुख्य आधार बन गया था। अबुल फज़ल ने भी इसी वजूदी विचारधारा को अपनाया। यह विचारधारा लोगों के आध्यात्मिक और बौद्धिक जीवन में किस हद तक बैठ गई थी। इसकी पुष्टि स्वंय अबुल फज़ल ने की है। इसी वजूदी विचारधारा का सार अबुल फज़ल ने एक शिलालेख के माध्यम से प्रकट किया है, जो इस प्रकार हैः ''हे प्रभु, हर मन्दिर में, मैं लोगों को तुम्हें ढ़ढते देखता हूँ। ... अनेक देवत्ववाद और इस्लाम तुझे ढूढ़ते है, प्रत्येक धर्म कहता है, तुम एक होअद्वैत एवं अपूर्व। ... तुम्हारे चुने हुए भक्तों को न तो नास्तिकता से और न रुढ़िवादिता से कोई सरोकार है, क्योंकि दोनों में कोई भी पर्दे के पीछे की तुम्हारी सत्यमा का ज्ञान नहीं रखता है। नास्तिकता, नास्तिकों के लिए है और धर्म रुढ़िवादी के लिए हैः परन्तु गुलाब के फूलों की पंखुड़ी के पराग का सम्बन्ध गंधी के हृदय से है।''इसे हिन्दुस्तान के अद्वैतवादियों के हृदयों को एकसूत्र में आबद्ध करने के उद्देश्य से ही निर्मित किया गया है।इसका निर्माण महान् दृष्टि के एक खण्ड, एक राज्य के सिंहासन और राजमुकुट के स्वामी अकबर बादशाह के आदेशानुसार हुआ है, जिसमें सातों चमत्कार सामान्य रुप से पाए जाते हैं जिसमें पांचों तत्व पूर्ण रुपेण मिश्रण को प्राप्त होते हैं।

हे ईश्वर! तुम न्यायकारी हो और मनुष्य को ध्येय से उसके कामों की जांच करते हो। तुम जानते हो कि कौन सा ध्येय उत्कृट है और बादशाह को बताते हो कि एक बादशाह का क्या ध्येय होना चाहिए[15]। इस प्रकार अबुल फज़ल अकबर के दरबार की नई बौद्धिक जागरुकता की सीमाओं को अच्छी तरह स्पष्ट कर देता है। लेकिन इस पक्ष के विपरीत अबुल फज़ल की बौद्धिकता का एक दूसरा पक्ष भी है। कभी–कभी वह ऐसी घटनाओं को पूर्णतया छोड़ देता है जिनसे अकबर की कमियां उजागर हो या उसकी बुद्धिमानी पर किसी प्रकार की आंच आए[16]।मुल्ला बदायूंनी ने यह टिप्पणी की

है कि; 'अबुल फज़ल अकबर का निर्लज्ज चापलूस था।' स्वयं अबुल फज़ल इससे सचेत था क्योंकि वह अनेक बार स्वयं को इस दोष से मुक्त होने की बात दोहराता है। लेकिन अकबरनामा की शैली, जिससे अबुल फज़ल ने प्रत्येक घटना का वर्णन करते हुए एक साहित्यिक चरमोत्कर्ष दिखाने का प्रचार किया है, यह अकबर के पक्ष में अतिश्याक्ति का संकेत देती है। अबुल फज़ल की दूसरी बौद्धिक कमी यह थी कि अकबरनामा व आईन–ए–अकबरी का काफी भाग उसने दूसरे स्रोंतों पर आधारित किया है परन्तु कहीं भी न तो इन स्रोतों को दर्शाया गया है और न ही स्वीकारा गया है। उसकी इस साहित्यक चोरी की बात प्रो. जैरट को अधिक अखरी है[17]। लेकिन इन सब दोषों के बावजूद अबुल फज़ल के पक्ष में यह बात कही जाएगी कि अकबरनामा की रचना के लिए उन्होंने जो विस्तृत शोधकार्य किया है, वह भारत में उनके समय तक एक व्यापकप्रामाणिक इतिहास लिखने का संभवतः सबसे उन्नत प्रयास था। बौद्धिक–साहित्यक संदर्भ में देखे तो अकबरनामा के अतिरिक्त अबुल फज़ल ने अयारे–दानिश की रचना की, जो कि अनवारे सुहैली का ही सरल व सुबोध रुप है। इसके अतिरिक्त असने मकतूबात–ए–अल्लामी तथा मुनाज़ात–ए–अबुल फज़ल की रचना भी की[18]। इनमें से पहली कृति में वे पत्र तथा फरमान है जो उसने अकबर के आदेशानुसार शासकों तथा प्रमुख अमीरों को लिखे थे। दूसरी कृति में ईश्वर के प्रति आह्वान तथा प्रार्थनाएं हैं। इसमें मतान्धता की निदा तथा सूफियों के 'वहादत–उल–वजूद' विचारधारा की प्रशंसा मिलती है[19]। इसके अतिरिक्त अबुल फज़ल ने महाभारत के फारसी अनुवाद की भूमिका लिखी तथा तारीख–ए–अल्फी के प्राक्कथन की रचना भी उसी ने की।

अतः कुल मिलाकर सारांश के तौर पर कहा जा सकता है कि अबुल फज़ल का बौद्धिक दृष्टिकोण धार्मिक न होकर धर्मनिरपेक्ष वादी था। अकबरनामा व आईने अकबरी को उसकी मूल्यवान बौद्धिक उपलब्धि माना जा सकता है। यद्यपि उसकी बौद्धिक धारनाएं व पूर्वानुमान सभी को मान्य नहीं थे तथापि उसके बौद्धिक तार्किक देन को नकारा नहीं जा सकता।

## संदर्भ सूचीः


1. शेख मुबारक अपने युग का पढ़ा–लिखा व्यक्ति था।कुछ समय के लिए वे अकबर के धार्मिक सलाहकार भी रहे। वे महज़र (1579)के रचायिता थे। उनके समकालीन इतिहासकारों ने उन्हें सम्पूर्ण शेख का दर्ज़ा दिया है। देखिएः बदायूनी, *मुन्तख–उत–तवारीख*, अंग्रेज़ी अनुवाद, डब्ल्यू. एच. ला, पटना, 1997, भाग 2, पृ. 402; निजामुद्दीन अहमद, *तबकाते* अकबरी, अनुवाद बी. डेअ, भाग–2, पृ. 701
2. अबुल फज़ल *आईन–ए–अकबरी* अनुवादक ब्लाचमैन भाग–1, दिल्ली, 1977, पृ. 25

3. वही, पृ. 34
4. अबुल फज़ल; *आईन–ए–अकबरी*, अंग्रेज़ी अनुवाद एच. एस. जैरेट, भाग–3, पृ. 499
5. एस. ए. रिजवी; *रिलीज़स एंड इन्टैलैक्चुअल हिस्ट्री ऑफ दि मुस्लिम इन अकबर्स रेन*, पृ. 95
6. एस. ए. रिज़वी; *मुगल कालीन भारत – हुमायूँ* (समीक्षा), भाग–1, पृ. 39
7. असद बेग; *विकाया–ए–असदबेग, इन इलियट एंड डाउसन (सम्पा.); हिस्ट्री ऑफ इंड़िया एज़ टोल्ड बॉय इट्स ऑन हिस्टोरियन्स*, भाग–6, पृ. 155
8. इरफान हबीब; *मध्यकालीन भारत में चिन्तन शक्ति और विज्ञान,* सम्पा. और अनुवाद रमेश रावत, भारतीय इतिहास में मध्यकाल, दिल्ली, 2002, पृ. 141
9. मोहिबुल हसन (सम्पा.);*हिस्टोरियन्स ऑफ मेड़िवल इंडिया*, मेरठ, 1968, पृ. 123.124
10. एस. ए. रिज़वी; *मुगल कालीन भारत – हुमायूँ*(समीक्षा), भाग–1, पृ. 41
11. हरबन्स मुखिया; *हिस्टोरियन्स एंड हिस्टोरियोग्राफी ड़्यूरिंग द रेन ऑफ अकबर*, पृ. 86
12. वही, पृ. 87
13. अज़रा निज़ामी; *सोशल–रिलीज़स आऊटलुक ऑफ अबुल फज़ल* अलीगढ़ 1971, पृ. 39
14. एस. ए. रिज़वी;ए *हिस्ट्री ऑफ सूफीज्म इन इंड़िया*, भाग–1, पृ. 103–109, भाग– 2, पृ. 36–53
15. अबुल फज़ल; *आईन–ए–अकबरी,* अनुवादक ब्लाचमैन भाग–1, पृ. 55
16. हरबन्स मुखिया; *मध्यकालीन भारतः नये आयाम*, अनुवादक नरेश नदीम, पृ. 33
17. अबुल फज़ल; *आईन–ए–अकबरी;*अनुवादक एच. एस. जैरट भाग–3, पृ. 8; प्रो. जैरट के अनुसार अबुल फज़ल पैराग्राफ के पैराग्राफ अक्षरक्ष दूसरे लेखकों के लेता है और कहीं भी उन स्रोतों को नहीं दर्शाता। प्रो. जैरट का यह आरोप मोटे रुप से आईन–ए–अकबरी के तीसरे भाग पर लागू होता है।
18. इलियट एंड डाउसन (सम्पा); *हिस्ट्री ऑफ इंड़िया एज़ टोल्ड बॉय इट्स ऑन हिस्टोरियन्स*, भाग–6, पृ. 5
19. हरबन्स मुखिया; *हिस्टोरियन्स एंड हिस्टोरियोग्राफी ड़्यूरिंग द रेन ऑफ अकबर*, पृ. 90